Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

* श्री वीतरागाय नमः *

* श्री पंचामृताभिषेक पाठ *

शांति मंत्र और आरतीसहित

— प्रकाशक —

जवेरी चांदमल जोधकरण गडिया
पटवा चाल जवेरी बाजार.
बम्बई नं. २

1958

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विषयानुक्रमणिका.

क्रम	विषय	पृष्ठ
१	श्रीपंचामृताभिषेक	१
२	मंगलाष्टक	१
३	अभिषेक पाठ	३
४	ज्येष्ठजिनवरजयमाला	११
५	शांतिमंत्र	१४
६	बृहच्छांतिमंत्र	१६
७	गंधोदकग्रहणश्लोक	२०
८	पंचपरमेष्ठी आरती	२१
९	पद्मावती आरती	२१
१०	पंचामृताभिषेकप्रमाण	२२
११	स्त्रीदानपूजाधिकारप्रमाण	२५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

* श्री वीतरागाय नमः *

श्री पंचामृताभिषेक पाठ

(शांति मंत्र और आरतीसहित)

– प्रकाशक –

जवेरी चांदमल जोधकरण गडिया

पटवा चाल, जवेरी बाजार

बंबई नं. २

– मुद्रक –

वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री

कल्याण पॉवर प्रिंटिंग प्रेस

कल्याण भवन सोलापूर.

प्रथमावृत्ति १००० | 1958 वीर संवत् २४८४ | मूल्य नित्यपूजन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आद्य निवेदन

श्री धर्मनिष्ठ सेठ चांदमल जोधकरण गडियाने यह पंचामृताभिषेकपाठ प्रकाशित कर षट्कर्मनिरत श्रावकोंके लिए महान् उपकार किया है। धर्मनिष्ठ दंपतियोंने व्रतोद्यापन किया, जिसके उपलक्ष्यमें शास्त्रदान किया गया, वह भी ऐसा शास्त्रदान, जिससे असंख्यश्रावक असंख्यकालतक शुभोपयोगमें प्रवृत्त होकर देवभक्ति करेंगे। इससे अर्जन होनेवाले पुण्यपुंजका श्रेय उक्त दातारोंको अवश्य मिलेगा ही।

आजकल वैसे ही धार्मिक क्रियाओंमें शिथिलता आगई है। लोग प्रमादी होते जा रहे हैं। धार्मिक कर्तव्योंको केवल नियम पूर्तिकी दृष्टिसे पूरा करनेकी प्रवृत्ति बढ रही है। कुछ लोग तो देवपूजा, जिनाभिषेकादि नित्य षट्कर्मोको टालनेके लिए उसमें अनेक प्रकारसे कुतर्क खडा कर देते हैं। "पंचामृताभिषेक शास्त्रोक्त नहीं है, स्त्रियां जिनाभिषेक नहीं कर सकती हैं, फलफूल नैवेद्य अपवित्र है, अतः अनिवेद्य हैं" इत्यादि स्वकपोल कल्पित तर्कोसे इन क्रियावोंसे स्वपरको वंचित करनेका प्रयत्न करते हैं। इन सब तर्कोंका आगमसम्मत समाधान इस पुस्तकमें किया गया है। उससे भव्य श्रावकोंको यथेष्ट लाभ होगा।

सातिशय जिनेंद्रभक्तिके लिए यह पुस्तक सर्वतोपरि सहायक हो सकती है। यदि धर्मबंधुवोंने उसका उपयोग कर आत्मविशुद्धिकी ओर अग्रसर होनेके लिए प्रयत्न किया तो लेखक, प्रकाशकका श्रम, व्यय, सभी सार्थक हैं।

वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री

(विद्यावाचस्पति, व्याख्यानकेसरी, समाजरत्न)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—❀ प्रस्तावना ❀—

भगवान् कुन्दकुन्दने धर्मका स्वरूप बताते हुए कहा है कि " वत्थुसहावो धम्मो " अर्थात् वस्तु द्रव्य, या पदार्थका जो स्वभाव है, अर्थात् उसका गुण है, वही उसका धर्म है। साथ ही साथमें यह भी बताया है कि जीवका स्वभाव है, शान्तता अर्थात् शुद्धजीव रागद्वेषादि परिणामोंसे रहित है। फिर भी देखा जाता है कि यह प्राणी अपने पूर्वोपार्जित कर्मोंके उदयसे अथवा अज्ञानसे निरंतर अनेक प्रकारके रागद्वेषादि करता है। और स्वयं अपनी पुरुषार्थकी हीनतासे आत्माके परिणामोंको कलुषित कर दिन प्रति दिन नीचेकी ओर अग्रसर होता हुआ अनादिकालसे संसारमें परिभ्रमण कर रहा है। इसी बातको लक्षमें रखकर उन चिरकालसे अशुभ रागादि परिणामोंमें सने हुए और रागअभ्यासियोंके रागपरित्यागके हेतु गृहस्थ श्रावकोंके लिये भगवन् श्री कुन्दकुन्दने "कुन्दकुन्द श्रावकाचार" रचकर परम वीतराग श्रीजिनेन्द्र भगवानके गुणोंमें अनुराग, पूजा, भक्ति स्तवन आदिका उपदेश देकर क्रमशः रागादि परिणामोंको छुडानेका प्रयत्न किया है। पूजाके अंगमें भगवान कुन्दकुन्दाचार्य रचित " " षट्पाहुड ग्रंथकी श्रुतसागरी वृत्तिमें लिखा है कि:—"...............जिनबिम्बस्य पञ्चामृतैः स्नपनं, अष्टविधैः पूजाद्रव्यैश्च पूजनं कुरुत यूयं, वंदना भक्तिश्च कुरुत। "

अर्थात्—"...........जिनप्रतिमाका पञ्चामृतसे अभिषेक करके अष्ट प्रकार द्रव्योंसे पूजन करना चाहिये। आदि लिखा है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पंडित दौलतरामजी पद्मपुराणकी भाषामें पर्व ३२ श्लोक १६५ से १६९ में लिखते हैं कि:—" जो नीर कर जिनेन्द्रका अभिषेक करे सो देवोंकर, मनुष्योंकर, सेवनीक चक्रवर्ती होय, जिसका राज्याभिषेक देव विद्याधर करें, और जो दुग्धकर अर्हन्तका अभिषेक करे सो क्षीरसागरके जलसमान उज्वल विमानविषै परम कान्तिधारक देव होय, फिर मनुष्य होय, मोक्ष पावें और दधिकर सर्वज्ञ वीतरागका अभिषेक करें सो दधिसमान उज्वल यशको पाय करि भवोदधिको तरे और जो घृतकरि जिननाथका अभिषेक करे सो स्वर्ग विमानविषे महान् बलवान देव होय, परंपरासे अनंतवीर्यको धरे और इक्षुरसकर जिननाथका अभिषेक करे, सो अमृतका आहारी सुरेश्वर होय। नरेश्वर पद पाय मुनीश्वर होय, अविनश्वर पद पावे। अभिषेकके प्रभावकर अनेक भव्यजीव देवोंकर इन्द्रों कर अभिषेक पावते भये तिनकी कथा पुराणोंविषे प्रसिद्ध है। "

तथा भगवान् उमास्वामी श्रावकाचारमें लिखते हैं कि:—

" शुद्धतोयेक्षुसर्पिर्भिर्दुग्धदध्याम्रजैः रसैः।
सर्वौषधिभिरुच्चूर्णैर्भावात्संस्नापयेज्जिनम् ॥ "

अर्थात्—शुद्धजल, इक्षुरस, घी, दूध, दही, आम्ररस और सर्वौषधि इत्यादिकोंसे जिनभगवानका अभिषेक करना चाहिये। आदि अनेक आचार्योंने पंचामृताभिषेकका उपदेश दिया है। श्री वीरसेन स्वामीने कषायपाहुड जयधवलामें भी इसी तरह पंचामृतोंसे जिनेन्द्र भक्ति करनेके लिये कहा है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसी आदर्शको लक्ष्यमें रखकर भाई श्री चांदमलजी गडिया तथा श्री जवाहरलालजी गांधी व हमने मिलकर पूर्वाचार्यों द्वारा प्रणीत अभिषेकपाठका संग्रह पूज्य भट्टारक यश:कीर्तिजी महाराज तथा पंडित उल्फतरायजी भिंड द्वारा संशोधन कराके तैयार किया है। श्रीधर्मरत्न पं. लालारामजी शास्त्रीने इसका बहुत परिश्रम-पूर्वक संशोधन किया है। और श्री विद्यावाचस्पति पं. वर्धमानजी शास्त्रीने अपनी देखरेखमें शुद्धतापूर्वक मुद्रण कराया है। अतः उन सभी विद्वानोंको हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

इस संग्रहमें फिर भी हमारी कोई अल्पज्ञतासे अशुद्धि रह गई हो तो क्षमा कर बुधजन सुधार कर योग प्रदान करें।

प्यारेलाल पन्नालाल कोटडिया
सैलाना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकाशकके दो शब्द.

पाठकगण ! मैं आपको यह बात बता देना चाहता हूं कि यह पंचामृताभिषेकपाठ क्यों छपाया गया। इसका कारण यह है कि पहले श्री गुलालवाडीके अपने मंदिरमें हस्तलिखित अभिषेक पाठकी कापी कराके एक पुस्तक हमने प्रकाशित कराई थी। परन्तु अपने माननीय पंडित इन्द्रलालजी शास्त्री जयपुर, पं. वर्द्धमानजी शास्त्री शोलापुर, पं. तनसुखलालजी काला आदि विद्वानोंने कहा कि यह अभिषेक पाठ बहुत ही अशुद्ध है। आप इसका संशोधन कराकर मंत्रोंसहित लिखाईये और फिर उससे अभिषेक कराईये। इन विद्वानोंकी इसी बातको लक्ष्यमें रखकर हमने भाई जवेरलालजी गांधी रतलामवालोंकी सहायतासे ग्रंथोंका संग्रह किया, हमारे भाग्यसे उसी अवसरपर सैलानासे भाई प्यारेलाल पन्नालालजी कोठडिया बम्बईमें पधारे। यद्यपि भाई प्यारेलालकी अवस्था छोटी ही है, तथापि उन्होंने अपनी विद्वत्ता तथा जानकारी बहुत अच्छी प्राप्त कर ली है, इसलिये हम उन्हें धन्यवाद देते हैं। उन्होंने अपना अमूल्य समय देकर उन संग्रह किये हुए ग्रन्थोंमेसे यथास्थान मंत्रोंका संग्रह करवा दिया और संशोधन करवा कर तथा लिखकर यह अभिषेकपाठ तैयार कराया। तदनंतर स्वर्गीय पंडित उल्फतरायजी भिंडवालोंसे भी इसका संशोधन कराया। उन दिनों पंडितजी बीमार थे। तथापि उन्होंने धर्मप्रेमसे केवल धर्मके प्रचारके लिये संशोधन कर हमें दिया। इसके लिये हम व समाज उनकी आभारी है। तदनन्तर पूज्य भट्टारकजी श्री यशःकीर्तिजी और पण्डित रामचंद्रजीने इसे पढकर अत्यंत प्रसन्नता प्रकट की तथा जनताको शीघ्र ही देनेके लिये, शीघ्र ही प्रकाशित करनेकी अनु-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मति दी । इसके शिवाय पं. मक्खनलालजी शास्त्री, पं. तनसुखलालजी काला, पं. उल्फतरायजी रोहतकवाले, पं. विद्यानंदि शास्त्री, तथा पं. लालारामजी शास्त्री आदि अन्य कितने ही विद्वानोंको दिखाकर आगमोक्त आर्षग्रंथोंसे प्रमाणित आचार्यप्रणीत यह पुस्तक प्रकाशित कराकर आप लोगोंके सामने भेट कर रहा हूं । आशा है आप भव्यजन अपनी आत्माको पवित्र करनेके लिये प्रतिदिन इस अभिषेक पाठका उपयोग करेंगे तथा धर्मका उपार्जन करेंगे, ऐसी मेरी भावना है ।

यद्यपि भरसक इसका संशोधन कराया जा चुका है, तथापि संभव है इसमें अनेक त्रुटियां रह गई हों, इसलिये प्रार्थना है कि विद्वान् लोग इसको सुधार कर पढें, त्रुटियोंके लिये हमें क्षमा करें तथा उन त्रुटियोंसे हमें सूचित करें, जिससे हम द्वितीयावृत्तीमें संशोधन कर सके ।

इस समय पंचामृताभिषेककी प्रथा शिथिलसी हो रही है, वह फिरसे जागृत हो और आगमोक्त धर्मका प्रचार हो, इसीलिये हमने यह पुस्तक प्रकाशित की है । हमारा तथा हमारी धर्मपत्नी (मोहनबाई चांदमल गडिया) का रविवारव्रत पूर्ण हुआ था। तथा भादों सुदी नौमी रविवार वीर सं. २४८१ के दिन उसका उद्यापन किया था। उसीके उपलक्ष्यमें ये एक हजार प्रतियां प्रकाशित कर वितरण की हैं । इसलिये धर्मप्रेमी भाइयोंको इस ग्रंथका लाभ अवश्य लेना चाहिये । यही हमारी अंतिम कामना है ।

वीरसम्वत् विक्रमसम्वत्
२४८४ २०१४

आपका—
चांदमल जोधकरण गडिया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—= सम्मतियां =—

(स्वर्गीय) श्री पं. उल्फतरायजी भिंडवाले

प्रत्येक श्रावकको प्रतिदिन भक्तिपूर्वक भगवानका अभिषेक करना चाहिये और वह पूर्ण विधिके साथ होना चाहिये। इस पुस्तकमें पंचामृताभिषेककी क्रिया विधिपूर्वक विस्तारके साथ दी है। अतः इससे सर्व भाइयोंको लाभ लेना चाहिये।

(पूज्य) भट्टारक श्री यशःकीर्तिजी महाराज

पंचामृताभिषेकका महत्त्व अत्यंत महान् है। अतः इसे भक्तिके साथ प्रतिदिन करना चाहिये। इस पुस्तकमें विस्तारके साथ पूर्ण विधि लिखी गई है तथा शान्तिमंत्र भी दिया गया है। अतः यह पुस्तक बडी उपयोगी है। आशा है यह शीघ्र ही प्रकाशित होकर भक्तजन इससे लाभ उठावेंगे।

श्री पं. माणिकचन्द काला बम्बई

इन्द्रने जिस भक्तिके साथ एक हजार आठ कलशोंसे भगवानका किया था उस भक्तिका दिग्दर्शन पंचामृताभिषेक करते हुये हमें होता है। भगवानका ऐसा अभिषेक पापोंका क्षय और पुण्यकी वृद्धि करनेवाला है। अतः किसी पक्षपातमें न पडकर इस आगमोक्त क्रियाको विधिविधानके साथ प्रतिदिन करना चाहिये। भाई चांदमलजी गडियाने इसे प्रकाशित कर अर्थको सार्थक किया है।

—✱✱—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री परमपूज्य चारित्रचक्रवर्ति

स्व. आचार्य शांतिसागरजी महाराज

श्री परमपूज्य चारित्रचूडामणि

मुनिराज नेमिसागरजी महाराज

बंबईमें वालकेश्वर तुलसीतलावपर

सामायिक कर रहे हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री वीतरागाय नमः

श्री पंचामृताभिषेक पाठ

श्रीपंचनमस्कार मंत्र

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरीयाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

मंगलाष्टकं.

श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभा ।
भास्वत्पादनखेंदवः प्रवचनांभोधींदवः स्थायिनः ।
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः ।
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥ १ ॥
सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं ।
मुक्तिश्रीनगराधिनाथजिनपत्युक्तोपवर्गप्रदः ।
धर्मः सूक्ति सुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्यालयं
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥२॥
नाभेयादि जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः ।
श्रीमंतो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ।
ये विष्णु प्रतिविष्णु लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशति-
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥३॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः ।
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा ।
द्वात्रिंशत्त्रिदशाधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥४॥

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पंच ये,
ये चाष्टांगमहानिमित्त कुशला येऽष्टाविधाश्चारणाः ।
पंचज्ञानधरास्त्रयोपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः
सप्तैते सकलार्चिता गणभृता कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥५॥

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः संम्मेदशैलेऽर्हतां ।
शेषाणामपि चोर्जयंतशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥६॥

ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जंबूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु ।
इष्वाकारगिरौ च कुंडलनगे द्वीपे च नंदीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु मे [ते] मंगलम् ॥ ७ ॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो ।
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥८॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्प्रदं ।
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः ।
ये श्रुण्वंति पठंति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता ।
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीमंगलाष्टकम् ॥

—**—

अथ अभिषेक पाठ.

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं
स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हम्
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतु—
र्जैनेन्द्रयज्ञविधिरेष मयाभ्यधायि ॥ १ ॥

ओं ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपनप्रस्तापनाय पुष्पाञ्जलिः क्षिपेत् ॥१॥

(नीचे लिखे श्लोकको पढकर आभूषण और यज्ञोपवीतधारण करना।)

श्रीमन्मन्दरसुन्दरे (मरतके) शुचिजलैर्धौतैः सदर्भाक्षतैः ।
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत्पादपद्मस्रजः ।
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थकमिदं यज्ञोपवीतं दधे ।
मुद्राकंकणशेखराण्यपि तथा जन्माभिषेकोत्सवे ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्वेतवर्णे सर्वोपद्रवहारिणि सर्वजनमनोरञ्जिनि परिधानोत्तरीयं धारिणि हं हं झं झं सं सं तं तं पं पं परिधानोत्तरीयं धारयामि स्वाहा ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ओं नमो परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकृताय अहं रत्नत्रय-स्वरूपं यज्ञोपवीतं धारयामि मम गात्रं पवित्रं भवतु ऱ्हीं नमः स्वाहा ।

(तिलक लगानेका श्लोक.)

सौगंध्यसंगतमधुव्रतझङ्कृतेन,
संवर्ण्यमानमिव गंधमनिंद्यमादौ ।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृन्दवन्द्य-
पादारविंदमभिवंद्य जिनोत्तमानाम् ॥ ३ ॥

(भूमिप्रक्षालनका श्लोक)

ये संति केचिदिह दिव्यकुलप्रसूता,
नागा प्रभूतबलदर्पयुता भुवोऽधाः ।
संरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम् ॥ ४ ॥

ओं ऱ्हीं जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा ॥

(पीठप्रक्षालनका श्लोक)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्यदनेकवारम् ।
अत्युद्यमुद्यतमहं जिनपादपीठं,
प्रक्षालयामि भवसंभवतापहारि ॥ ५ ॥

ओं ऱ्हां ऱ्हीं ऱ्हूं ऱ्हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर-जलेन पीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा ॥ ५ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(पीठपर श्रीकारलेखन)

श्रीशारदासुमुखनिर्गतबीजवर्णं
श्रीमंगलीकवरसर्वजनस्य नित्यं ।
श्रीमत्स्वयं ज्ञपति तस्य विनाशविघ्नं ।
श्रीकारवर्णलिखितं जिनभद्रपीठे ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्रीकारलेखनं करोमि स्वाहा ॥ ६ ॥

(अग्निप्रज्वालनक्रिया)

दुरन्तमोहसन्तानकान्तारदहनक्षमम् ।
दर्भैः प्रज्वालयाम्यग्निं ज्वालापल्लवितांबरम् ॥ ७ ॥
ओं ह्रीं अग्निप्रज्वालयामि स्वाहा ॥ ७ ॥

(दशदिक्पालक आव्हान)

इन्द्राग्निदंडधरनैऋतपाशपाणि ।
वायूत्तरेण शशिमौलिफणींद्रचन्द्राः ।
आगत्य यूयमिह सानुचराः सचिन्हाः ।
स्वं स्वं प्रतीच्छत बलिं जिनपाभिषेके ॥ ८ ॥

(दशदिक्पालक मंत्र)

ओं आं क्रौं ह्रीं इन्द्र आगच्छ आगच्छ इन्द्राय स्वाहा ॥ १ ॥
ओं आं क्रौं ह्रीं अग्ने आगच्छ आगच्छ अग्नये स्वाहा ॥ २ ॥
ओं आं क्रौं ह्रीं यम आगच्छ आगच्छ यमाय स्वाहा ॥ ३ ॥

For Private and Personal Use Only

ओं आं क्रौं ह्रीं नैऋत आगच्छ आगच्छ नैऋताय स्वाहा ॥ ४ ॥
ओं आं क्रौं ह्रीं वरुण आगच्छ आगच्छ वरुणाय स्वाहा ॥ ५ ॥
ओं आं क्रौं ह्रीं पवन आगच्छ आगच्छ पवनाय स्वाहा ॥ ६ ॥
ओं आं क्रौं ह्रीं कुबेर आगच्छ आगच्छ कुबेराय स्वाहा ॥ ७ ॥
ओं आं क्रौं ह्रीं ऐशान आगच्छ आगच्छ ऐशानाय स्वाहा ॥ ८ ॥
ओं आं क्रौं ह्रीं धरणेंद्र आगच्छ आगच्छ धरणेंद्राय स्वाहा ॥ ९ ॥
ओं आं क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ आगच्छ सोमाय स्वाहा ॥ १० ॥

नाथ ! त्रिलोकमहिताय दश प्रकार ।
धर्माम्बुवृष्टिपरिषिक्तजगत्त्रयाय ।
अर्घं महार्घगुणरत्नमहार्णवाय ।
तुभ्यं ददामि कुसुमैर्विशदाक्षतैश्च ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालकेभ्यो इदं अर्घं पाद्यं गंधं दीपं धूपं चरुं बलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिग्रह्यतां२ स्वाहा ॥९॥

(क्षेत्रपालको अर्घ)

भो क्षेत्रपाल ! जिनपः प्रतिमांकपाल,
दंष्ट्रा कराल जिनशासनरक्षपाल ॥
तैलादिजन्म गुडचन्दनपुष्पधूपै–
र्भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वरयज्ञकाले ॥
विमलसलिलधारामोदगन्धाक्षतौघैः,
प्रसवकुलनिवेद्यैर्दीपधूपैः फलौघैः ।
पटह पटुतरौघैः वस्त्रसद्भूषणौघैः
जिनपतिपदभक्त्या ब्रह्मणं प्रार्चयामि ॥ १० ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ओं आं क्रौं अत्रस्थ विजयभद्र–वीरभद्र–माणिभद्र–भैरवापरा-जित- पंचक्षेत्रपालाः इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं चरुं बलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिग्रह्यतां प्रतिग्रह्यतामिति स्वाहा ॥

(दिक्पाल और क्षेत्रपालको पुष्पाञ्जली)

जन्मोत्सवादिसमयेषु यदीय कीर्तिः,
सेन्द्राः सुराः प्रमदभारनता स्तुवन्ति ।
तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुध्या
पुष्पांजलिं मलयजाद्रिमुपाक्षिपेऽहम् ॥ ११ ॥

इति पुष्पाञ्जलिः क्षिपेत् ॥ ११ ॥

(कलशस्थापन और कळशोंमें जलधारा देना)

सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरूप्य—
ताम्रारकूटघटितान् पयसा सुपूर्णान् ।
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्
संस्थापयामि कलशान् जिनवेदिकांते ॥ १२ ॥

ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंच्छ केशरी पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहि-द्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्ण-कूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधिशुद्धजलं सुवर्णघटं प्रक्षालित परिपूरित नवरत्नगन्धपुष्पाक्षताभ्यर्चितमामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं अ सि आ उसा नमः स्वाहा ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(अभिषेकके लिये प्रतिमाजीको अर्घ चढाना)

उदकचन्दनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥१३॥

ओं ह्रीं परमब्रह्मणेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये अष्टादशदोष-रहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय अर्हत्परमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये-अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३ ॥

(बिम्बस्थापना)

यः पांडुकामलशिलागतमादिदेव
मस्नापयन् सुरवरा सुरशैलमूर्ध्नि
कल्याणमीप्सुरहमक्षततोयपुष्पैः
संभावयामि पुर एव तदीयबिम्बम् ॥ १४ ॥

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा ॥

(मुद्रिकास्वीकार)

प्रत्युप्तनीलकुलिशोपलपद्मराग—
निर्यत्करप्रकरबद्धसुरेन्द्रचापम् ।
जैनाभिषेकसमयेऽङ्गुलिपर्वमूले ।
रत्नाङ्गुलीयकमहं विनिवेशयामि ॥ १५ ॥

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ साय नमः मुद्रिकाधारणं ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(जलाभिषेक १)

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटिसंलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रिम्
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपि प्रकृष्टैर्भक्त्या जलैर्जिनपतिंबहुधाभिषिञ्चे

मंत्र–(१) ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रावय द्रावय ओं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

मंत्र (२)–ओं ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतं चतुर्विंशतितीर्थकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे···················देशे···················नाम नगरे एतद्···············जिनचैत्यालये सं.···············मासोत्तम मासे···················पक्षे तिथौ············वासरे प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनि–आर्यिका–श्रावकश्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम् । *

अर्घः–उदक चंदन···················अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

(फलरसाभिषेक २)

मुक्त्यंगनानर्मविकीर्यमाणैः पिष्टार्थकर्पूररजोविलासैः।
माधुर्यधुर्यैर्वरशर्करौघैर्भक्त्या जिनस्य वरसंस्नपनं करोमि ।।

---

* नोटः–उपरोक्त दोनों मंत्रोंमेंसे कोई एक मंत्र बोलना चाहिये ।

नोटः— प्रतिष्ठापाठादिमें जलके बाद फल रसका ही अभिषेक है ।

नोटः–जो रस मौजूद हो उसीका श्लोक पढकर चढाना चाहिये ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मंत्रः—ओं ह्रीं ....इति शर्करास्नपनम् ।
अर्घः—उदकचन्दन ....अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

भक्त्या ललाटतटदेशनिवेशितोच्चैः ।
हस्तैश्च्युता सुरवरासुरमर्त्यनाथैः ॥
तत्कालपीलित महेक्षुरसस्य धारा ।
सद्यः पुनातु जिनबिम्बगतैव युष्मान् ॥ १९ ॥

मंत्रः—ओं ह्रीं ....इति इक्षुरसस्नपनम् ।
अर्घः—उदकचन्दन ....अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नालिकेरजलैः स्वच्छैः शीतैः पूतैर्मनोहरैः ।
स्नानक्रियां कृतार्थस्य विदधे विश्वदर्शिनः ॥ २० ॥

मंत्रः—ओं ह्रीं ....इति नालिकेररसस्नपनम् ।
अर्घः—उदकचन्दन ....अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सुपक्वैः कनकच्छायैः सामोदैर्मोदकारिभिः ।
सहकाररसैः स्नानं कुर्मः शर्मैकसद्मनः ॥ २१ ॥

मंत्रः—ओं ह्रीं ....इति आम्ररसस्नपनम् ।
अर्घः—उदकचन्दन ....अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(घृताभिषेक ३)

उत्कृष्टवर्ण—नव—हेम—रसाभिराम—
देहप्रभावलयसङ्गमलुप्तदीप्तिम् ।
धारां घृतस्य शुभगन्धगुणानुमेयां
वन्देऽर्हतां सुरभि संस्नपनोपयुक्ताम् ॥ २२ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मंत्रः—ओं ऱ्हीं..............................इति घृतस्नपनम् ।
अर्घः—उदकचंदन....................अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(दुग्धाभिषेक ४)

सम्पूर्ण-शारद-शशांकमरीचिजाल-
स्पन्दैरिवात्मयशसामिव सुप्रवाहैः ।
क्षीरैर्जिनाः शुचितरैरभिषिच्यमानाः ।
सम्पादयन्तु मम चित्तसमीहितानि ॥ २३ ॥

मंत्रः—ओं ऱ्हीं..........................इति दुग्धाभिषेकस्नपनम् ।
अर्घः—उदकचन्दन......................अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जेष्ठजिनवरजयमाला.

(भट्टारक ब्रह्मकृष्णकृत)

अमरनयरिसम नयरि अयोध्या नाभिनरेन्द्र वसे निजबुध्या ॥
सुरपति मेरुशिखर ले चढिया कनक कलश क्षीरोदधि भरिया ॥
तसघर राणी मरुदेवी माया युगपति आदि जिनेश्वर जाया ॥
* ज्येष्ठमास अभिषेक जु करिया अष्टोत्तर शत कुंभजु भरिया ॥
भभकत जलधारा संचरिया ललितकलोल धरणि उतरयिया ॥
जय जय सुरनि करी उच्चरिया इन्द्रइन्द्राणी सिंहासन धरिया ॥
अंग अनंग विभूषण धरिया कुंडलहार हरितमणि जडिया ॥

नोटः— * जिस महीनेमें अभिषेक किया जाय उस महीनेका नाम बोलना चाहिये। यह जयमाला दुग्धाभिषेकके समय बोली जाती है। प्रत्येक पंक्तिके बाद 'सुरपति मेरुशिखर' वाली पंक्तिको दुहराना चाहिये।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऋषभ नाम शतमुखविस्तरिया कमलनयन कमलापति कहिया ॥
युगला धर्मनिवारण चरिया सुरनर निकर गंधोदक महिया ॥
रत्न कचोल कुमारिनि भरिया जिनचरणाम्बुज पूजत हरिया ॥
हिम हिमांशु चन्दन घनसरिया भूरि सुगंध गंध पसरयिया ॥
अक्षत अक्षतवास लहरिया रोहिणिकांत किरणसम सरिया ॥
देखत रुचिकर अमरनि करिया पंचमुष्टि जिन आगे धरिया ॥
सुन्दर पारिजात मोगरिया कमल वकुल पाटल कुमदरिया ॥
चरुवर दीप लेय अपछरिया जिनवर आगे उतारि उधरिया ॥
अगर तगर धूप फलफलिया फणस रसाल मधुर रसभरिया ॥
कुसुमांजलि सांजलि समुजलिया पंडितराय अभ्रवच कलिया ॥
त्रिभुवनकीर्ति पदपंकज वरिया रत्नभूषणसूरि महापद कहिया ॥
ब्रह्मकृष्ण जिनराज स्तविया जयजयकार करी मनहरिया ॥
कुंभ कलश भरि जयजिनवरिया शास्वत शर्म सदा अनुसरिया ॥

यावंति जिनचैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये ॥
तावन्ति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नमाम्यहम् ॥

(दध्यभिषेक ५)

दुग्धाब्धिवीचिचयसंचितफेनराशि-
पाण्डुत्वकांतिमवधीरयतामतीव ।
दध्नांगता जिनपतेः प्रतिमां सुधारा ।
सम्पद्यतां सपदि वाञ्छितसिद्धये वः ॥ २४ ॥

मंत्रः—ओं ह्रीं ....इति दाधिस्नपनम् ।
अर्घः—उदकचंदन ....अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(सर्वौषधि ६)

संस्नापितस्य घृतदुग्धदधीक्षुवाहैः ।
सर्वाभिरौषधिभिरर्हत उज्वलाभिः ।
उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेकमेला
कालेयकुंकुमरसोत्कटवारिपूरैः ॥ २५ ॥

मंत्रः—ओं ह्रीं·························इति सर्वौषधिस्नपनम् ।

अर्घः—उदकचंदन·····················अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

(चन्दनलेपनम् ७)

संशुद्धशुद्ध्या परया विशुध्या । कर्पूरसम्मिश्रितचन्दनेन ॥
जिनस्य देवासुरपूजितस्य । विलेपनं चारु करोमि भक्त्या ॥२६॥

मंत्रः—ओं ह्रीं················इति चंदनलेपनम् करोमीति स्वाहा ।

अर्घः—उदकचंदन················अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चतुःकोणकुंभकलशाभिषेकः ८)

इष्टैर्मनोरथशतैरिव भव्यपुंसां । पूर्णैः सुवर्णकलशैर्निखिलैर्वसानैः
संसारसागरविलंघनहेतुसेतु-माप्लावये त्रिभुवनैकपतिं जिनेन्द्रम्

मंत्रः—ओं ह्रीं················इति चतुःकोणकुम्भकलशस्नपनम् ।

अर्घः—उदकचंदन···················अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(मंगलआरति ९)

दध्युज्वलाक्षतमनोहरपुष्पदीपैः। पात्रार्पितं प्रतिदिनं महतादरेण
त्रैलोक्यमंगलसुखालयकामदाह-मारार्तिकं तव विभोरवतारयामि

(इति मंगलआरति अवतारणम्)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(पूर्णसुगंधितकलशाभिषेक १०)

द्रव्यैरनल्पघनसारचतुः समाढ्यै-रामोदवासितसमस्तदिगंतरालैः मिश्रीकृतेन पयसा जिनपुंगवानां त्रैलोक्यपावनमहं स्नपनं करोमि

ओं ह्रीं····················इति पूर्णसुगंधितजलस्नपनम् ।

अर्घः—उदकचन्दन····················अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

(पुष्पवृष्टि ११)

यस्य द्वादशयोजने सदसि सद् गंधादिभिः स्वोपमा-
नप्यर्थान्सुमनोगणान्सुमनसा वर्षंति विश्वक् सदा ।
यः सिद्धिं सुमनः सुखं सुमनसां स्वं ध्यायतामावह-
त्तं देवं सुमनोमुखैश्च सुमनोभेदैः समभ्यर्चये ।।

मंत्रः—ओं ह्रीं सुमनःसुखप्रदाय पुष्पवृष्टिं करोमि स्वाहा ।।

अथ शांतिमन्त्रः प्रारभ्यते ।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः । श्री वीतरागाय नमः । ओं नमोऽर्हते भगवते । श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यानपवित्राय । सर्वज्ञाय । स्वयंभुवे । सिद्धाय । बुद्धाय । परमात्मने । परमसुखाय । त्रैलोक्यमहिव्याप्ताय । अनन्तसंसारचक्रपरिमर्दनाय । अनंतदर्शनाय । अनन्तवीर्याय । अनन्तसुखाय सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशङ्कराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय, ऋष्यार्यिका— श्रावक— श्राविकाप्रमुखचतुस्सङ्घोपसर्गविनाशनाय, घातिकर्मविनाशनाय, अघातिकर्मविनाशनाय, अपवायं छिंद छिंद, भिंद भिंद। मृत्युं छिंद २ भिंद २

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अतिकामं छिंद २ भिंद २ । रतिकामं छिंद २ भिंद २ । क्रोधं छिंद २ भिंद २ । अग्निं छिंद २ भिंद २ । सर्वशत्रुं छिंद २ भिंद २ । सर्वोपसर्गं छिंद २ भिंद २ । सर्वविघ्नं छिंद २ भिंद २ । सर्वभयं छिंद, २ भिंद २ । सर्वराजभयं छिंद २ भिंद २ । सर्व चौरभयं छिंद २ भिंद २ । सर्व दुष्टभयं छिंद २ भिंद २ । सर्वमृगभयं छिंद २ भिंद २ । सर्वमात्मकभयं छिंद २ भिंद २ । सर्वपरमंत्रं छिंद २ भिंद २ । सर्वशूलरोगं छिंद २ भिंदं २ । सर्वक्षयरोगं छिंद २ भिंद २ । सर्व कुष्टरोगं छिंद २ भिंद २ । सर्व क्रूररोगं छिंद २ भिंद २ । सर्व नरमारीं छिंद २ भिंद २ । सर्व गजमारीं छिंद २ भिंद २ । सर्वाश्वमारीं छिंद २ भिंद २ । सर्व गोमारीं छिंद २ । भिंद २ । सर्व महिषमारीं छिंद २ भिंद २ । सर्व धान्यमारीं छिंद २ । भिन्द २ । सर्ववृक्षमारीं छिंद २ भिंद२ । सर्व गलमारीं छिंद २ भिंद २ । सर्व पत्रमारीं छिंद २ भिंद २ । सर्व पुष्पमारीं छिंद २ भिंद २ । सर्व फलमारीं छिंद २ भिंद २ । सर्व राष्ट्रमारीं छिंद २ भिंद २ । सर्व देशमारीं छिंद २ भिंद २ । सर्व विषमारीं छिंद २ भिंद २ । सर्व वेतालशाकिनीभयं छिंद २ भिंद २ । सर्ववेदनीयं छिंद २ भिंद २ । सर्व मोहनीयं छिंद २ भिंद २ । सर्व कर्माष्टकं छिंद २ भिंद २ ।

ओं सुदर्शन महाराज चक्रविक्रमतेजोबलशौर्यवीर्यशांतिं कुरु कुरु । सर्वजनानन्दनं कुरु कुरु । सर्वभव्यानन्दनं कुरु कुरु । सर्व गोकुलानन्दनं कुरु कुरु । सर्व ग्रामनगरखेटकर्वटमटंबपत्तन-द्रोणमुखमहानंदनं कुरु कुरु । सर्व लोकानन्दनं कुरु कुरु । सर्व देशा-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नन्दनं कुरु कुरु । सर्व यजमानानन्दनं कुरु कुरु । सर्व दुःखं, हन हन, दह दह, पच पच, कुट कुट, शीघ्रं शीघ्रं ।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिर्व्यसनवर्जितं ।
अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते ॥

शिवमस्तु । कुलगोत्रधनधान्यं सदास्तु । चन्द्रप्रभ–वासुपूज्य–मल्लि-वर्द्धमान-पुष्पदन्त-शीतल-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः ॥

(इत्यनेन मन्त्रेण नवग्रहार्थं गन्धोदकधारावर्षणम् ॥)

(गन्धोदकवन्दनमंत्रः)

निर्मलं निर्मलीकरणं पवित्रं पापनाशनम् ।
जिनगन्धोदकं वन्दे कर्माष्टकनिवारणम् ॥

इति गन्धोदकवन्दनम् ॥

अथ बृहच्छान्तिमंत्रः प्रारभ्यते ।

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमो अर्हते भगवते ओं ह्रीं क्रौं मम पापं खंडय खंडय हन हन दह दह पच पच पाचय पाचय शीघ्रं कुरु कुरु । ओं नमोऽर्हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सं झं वं ह्वः पः हः क्षां क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षौं क्षः ओं ह्रां ह्रिं ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम पूजकस्य (सर्वेषां पूजकानाम्) ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ।

ओं द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः मम श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु पुष्टिरस्तु शांतिरस्तु कांतिरस्तु कल्याणमस्तु मम कार्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिद्ध्यर्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थं श्रीमद्भगवतः सर्वोत्कृष्टत्रैलोक्यनाथार्चितपादपद्मप्रसादात् सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु स्वस्तिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु श्रीशान्तिनाथो मां प्रति प्रसीदतु, श्रीवीतरागदेवो मां प्रति प्रसीदतु, श्रीजिनेन्द्र–परममंगल्यनामधेयो ममेहामुत्र च सिद्धिं तनोतु,

ओं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चिन्तामणि–पार्श्वतीर्थंकराय रत्नत्रयरूपाय अनन्तचतुष्टयसहिताय धरणेंद्रफणामण्डलमण्डिताय समवशरणलक्ष्मीशोभिताय इन्द्रधरणेन्द्रचक्रवर्त्यादि–पूजितपादपद्माय केवलज्ञानलक्ष्मी–शोभिताय जिनराजमहादेवाय अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशत्गुणसंयुक्ताय परमगुरु परमात्मने सिद्धाय बुद्धाय त्रैलोक्यपरमेश्वराय देवाय सर्वसत्वहितंकराय धर्मचक्राधीश्वराय सर्वविद्यापरमेश्वराय त्रैलोक्यमोहनाय धरणेंद्रपद्मावतीसहिताय अतुलबलवीर्यपराक्रमाय अनेकदैत्यदानवकोटिमुकुटघृष्टपादपीठाय ब्रह्माविष्णुरुद्रनारदखेचरपूजिताय सर्वभव्यजनानन्दकराय सर्वरोगमृत्युघोरोपसर्गविनाशाय सर्वदेशग्रामपुरपट्टनराजा–प्रजाशान्तिकराय सर्वजीवविघ्ननिवारणसमर्थाय श्रीपार्श्वदेवाधिदेवाय नमोस्तु श्रीजिनराजपूजनप्रसादात् सर्वसेवकानां सर्वदोषरोगशोकभयपीडाविनाशनं कुरु कुरु सर्वशांतिं तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा । ओं नमो श्री शांतिदेवाय सर्वारिष्टशांतिकराय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रों ह्रौं ह्रः असि आउसा मम सर्व विघ्नं शांतिं कुरु कुरु स्वाहा, मम तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा ।

श्री पार्श्वनाथपूजनप्रसादात् मम अशुभानि पापानि छिंद २ भिंद २, मम परदुष्टजनोपकृत मंत्र तंत्र दृष्टिं मुष्टिं छलछिद्र-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दोषान् छिंद २ भिंद २, मम अग्निचोरजलसर्वव्याधिं छिंद २ भिंद २, मारीकृतोपद्रवान् छिंद २ भिंद २, सर्वभैरवदेवदानव वीरनरनारिसिंहयोगिनीकृत विघ्नान् छिंद २ भिंद २, डाकिनी शाकिनी—भूत—भैरवादिकृतविघ्नान् छिंद २ भिन्द २, भवनवासी-व्यन्तर—ज्योतिषीदेवदेवीकृतविघ्नान् छिंद २ भिद २, अग्निकुमार-कृत विघ्नान् छिंद २ भिंद २, उदधिकुमारस्तनितकुमारकृतविघ्नान् छिंद २ भिन्द २, द्वीपकुमार-दिक्कुमारकृतविघ्नान् छिंद २ भिद २, वातकुमारमेघकुमारकृतविघ्नान् छिंद २ भिंद २, इन्द्रादि—दश-दिक्पालदेवकृतविघ्नान् छिंद २ भिंद २, जय—विजय—अपराजित मणिभद्र—पूर्णभद्रादि क्षेत्रपालकृत विघ्नान् छिंद २ भिंद २, राक्षस वैताल—दैत्य—दानव—यक्षादिकृतविघ्नान् छिंद २ भिंद २, नवग्रहकृत सर्वग्रामनगरीपीडां छिंद २ भिंद २, सर्व ग्रामनगरदेशमारीरोगान् छिंद २ भिंद २, सर्वस्थावरजंगमवृश्चिकदृष्टिविषजातिविष सर्पादि-कृत दोषान् छिंद २ भिंद २, सर्व सिंहअष्टापदव्याघ्रव्यालवनचर-जीवभयान् छिंद २ भिंद २, परशत्रुकृत—मारणोच्चाटन विद्वेषन—मोहन—वशीकरणादिदोषान् छिंद २ भिंद २, सर्वदेशपुर-मारीं छिंद २ भिंद २, सर्व राजनरमारीम् छिंद २ भिंद २, सर्व हस्ति—घोटकमारीं छिंद २ भिंद २, ओं भगवती श्री चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावती देवी अस्मिन् जिनेन्द्रभवने आगच्छ २ एहि २ तिष्ठ २ बलिं ग्रहाण २ मम धनधान्यसमृद्धिं कुरु २ सर्व भव्यजीवानन्दनं कुरु कुरु सर्व देशग्रामपुरमध्ये क्षुद्रोपद्रव—सर्व

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दोषमृत्युपीडाविनाशनं कुरु २ सर्वपरभयनिवारणं कुरु २ स्वाहा ।

ओं आं क्रौं ह्रीं श्री वृषभादि वर्धमानांत—चतुर्विंशति-तीर्थंकरमहादेवाः प्रियंतां २, मम पापानि शाम्यंतु घोरोपसर्गाणि सर्वविघ्नानि शाम्यंतु, ओं आं क्रौं ह्रीं श्री चक्रेश्वरी–ज्वालामालिनी पद्मावती देवी प्रियंताम् २, ओं आं क्रौं ह्रीं श्रीं रोहिण्यादि-महादेवी अत्र आगच्छ २ सर्व देवताः प्रियंताम् २, ओं आं क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्रादि यक्षकुमारदेवाः प्रियंताम् २, सर्वे जिनशासन--रक्षक देवाः प्रियंताम् २, श्री आदित्य सोम मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि राहु केतु सर्वे नवग्रहदेवाः प्रियंताम् २ प्रसीदंतु ।

देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेंद्रः ।
यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिर्व्यसनवर्जितं ।
अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु मम सदा ।
यस्यार्थं क्रियते कर्म स प्रीतो नित्यमस्तु मे ।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।
आव्हानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम् ।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।

।। इति शांतिधारा ।।

—**—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गन्धोदक लेनेका श्लोक.

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं पुण्यांकुरोत्पादकं ।
नागेन्द्रत्रिदशेन्द्रचक्रपदवी–राज्याभिषेकोदकम् ॥
सम्यग्ज्ञानचारित्रदर्शनलता–संवृद्धिसम्पादकम् ।
कीर्ति–श्रीजयसाधकं तव जिन ! स्नानस्य गंधोदकम् ॥

चंदन चढानेका श्लोक.

ताम्यत्त्रिलोकोदरमध्यवर्ति–समस्तसत्त्वाहितहारिवाक्यान् ।
श्रीचंदनैर्गंधविलुब्धभृंगै–र्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहम् ॥

ओं ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्तज्ञानशक्तये अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय अर्हत्परमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प चढानेका श्लोक.

विनीतभव्याब्जविबोधसूर्यान् वर्यान् सुचर्यान् कथनैकधुर्यान् ।
कुन्दारविंदप्रमुखैः प्रसूनैर्जिनेन्द्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहम् ॥

ओं ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्तज्ञानशक्तये अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय अर्हत्परमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

—= इति अभिषेकपाठः =—

—०—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पंचपरमेष्ठीकी आरती.

यह विधि मंगल आरति कीजे, पंचपरमपद भजि सुख लीजे।
प्रथम आरती श्री जिनराजा, भवदधि पार उतार जिहाजा ॥१॥
दूजी आरति सिद्धनकेरी सुमिरन करत मिटत भवफेरी ॥ २ ॥
तीजी आरति सूरि मुनींद्रा जन्ममरण दुख दूर करिंदा ॥ ३ ॥
चौथी आरति श्री उवझाया, दर्शन होवत पाप पलाया ॥ ४ ॥
पांचवीं आरति साधु तुम्हारी, कुमतिविनाशन शिवअधिकारी।
छट्ठी ग्यारह प्रतिमाधारी, श्रावक वंदो आनंदकारी ॥ ६ ॥
सातवीं आरति श्रीजिनवाणी, सेवत स्वर्ग–मुकतिसुखदानी।
पूजा करके आरति कीजे, जनम जनमका लाहो लीजे।
जो यह आरति पढे पढावे, द्यानत अजर अमर पद पावे ॥

पद्मावति माताकी आरती.

पद्मावति माता दर्शनकी बलिहारियां ।
पार्श्वनाथ महाराज विराजे मस्तक ऊपर थारे ।
इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र सभी खडे रहे नित द्वारे ॥पद्मावति ॥
जो जिय थारो शरणो लीनो सब संकट हर लीनो ।
पुत्र पौत्र धन संपति देकर मंगलमय करि दीनो ॥ २ ॥
डाकिन शाकिन भूत भवानी नाम लेत भगजावे ।
वात पित्त कफ रोग मिटे अरु तन मन सुख हो जावे ॥३॥
दीप धूप अरु पुष्पहार ले मैं दर्शनको आया ।
दर्शन करके माता तुम्हारे मनवांच्छित फल पाया ॥४॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पंचामृताभिषेकके विषयमें कुछ प्रमाण

यहां थोडेसे प्रमाण दिये हैं । इनके सिवाय भी और अनेक प्रमाण हैं । माननीय सेठ गोपीचंदजी ठोल्या जोहरी जयपुरवालोंने एक अभिषेक पाठ छपाया है । उसमें चौदह आचार्योंके अलग अलग चौदह पंचामृताभिषेक पाठ हैं । उनमें पूज्यपाद जैसे महा आचार्योंके पाठ हैं । उनको देखकर श्रावकोंको श्रद्धापूर्वक पंचामृताभिषेक और आगमोक्त कार्य करना चाहिये ।

पंचामृताभिषेक पोषक कुछ आचार्यों व ग्रन्थोंके नामः —

नाम शास्त्र	नाम आचार्य	नाम शास्त्र	नाम आचार्य
उमास्वामीश्रावकाचार	उमास्वामी	कषायपाहुड(जयधवला)	वीरसेन
सागारधर्मामृत	पं. आशाधर	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	शिवकोटि
भावसंग्रह	देवसेन	अकलंकप्रतिष्ठातिलक	अकलंक
भावसंग्रह	वामदेव	कुंदकुंदश्रावकाचार	कुंदकुंद
पद्मपुराण	रविषेण	अभयनंदिअभिषेकपाठ	अभयनंदि
आदिपुराण	जिनसेन	पद्मनंदिपंचविंशतिका	पद्मनंदि
श्रावकाचार	वसुनंदि	नेमिचन्द्रप्रतिष्ठातिलक	नेमिचन्द्र
हरिवंशपुराण	जिनसेन	दानशासन	वासुपूज्य
चन्द्रप्रभ चरित्र	पं. दामोदर	नीतिसार	इन्द्रनंदि सि. च.
धर्मसंग्रहश्रावकाचार	पं. मेधावी	तत्वार्थसूत्र टीका	श्रीश्रुतसागर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चन्दन तथा पुष्पोंसे पूजा किस प्रकार की जाये:—

चन्दनसे पूजन श्री जिनेन्द्रके चरणोंको चर्चनेसे होती है, न कि सन्मुख चढानेसे। पुष्प भी श्री जिनेन्द्रके चरणोंपर ही चढाना चाहिये। बडे २ आचार्योंका यही मत है।

श्री वीरसेन स्वामी कषायपाहुड जयधवला पत्र १००

ण्हवणोवलेवण समज्जण छुहावण, फुल्लारोवण धूवदहणादि वावारेहि जीववहाविणाभावीहि विणा पूजकरणाणुववत्तीदो च।

भावार्थ—अभिषेक करना, अवलेप करना, संमार्जन करना, चंदन लगाना, फूल चढाना और धूप जलाना आदि जीववधके अविनाभावी व्यापारोंके बिना नहीं बन सकता है।

इसमें अवलेवण व फुल्लारोवण शब्द आया है। यह स्पष्ट प्रकट कहता है कि चंदन और पुष्प भगवानके चरणपर चढाना चाहिये।

चंदण सुअंधलेओ जिणवरचरणेसु कुणई जो भविओ।
लहई तणु विक्किरियं सहाव–ससुअंधयं विमलं।

—देवसेन भावसंग्रह.

पुष्पके लिये भी भावसंग्रहमें ऐसा ही लिखा हुआ है:— 'जिणचरणेषु पुष्पं धरई' यह पाठ है। इन प्रमाणोंसे स्पष्ट प्रकट हो रहा है कि गंध व पुष्पकी पूजा चर्चनेसे व चरणपर चढानेसे ही होती है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भगवान्की पूजन पूर्व तथा उत्तरकी ओर मुख करके ही करनी चाहिये। स्वयं उत्तरमुखी हो तो भगवान्को पूर्वमुख कर लेना चाहिये।

उदङ्मुखः स्वयं तिष्ठेत्, प्राङ्मुखं स्थापयेज्जिनम्।
पूजाक्षणे भवेन्नित्यं यमी वाचं यमक्रियः॥ यशस्तिलक

पूजा खडे खडे नहीं, किन्तु बैठकर ही करना चाहिये—

उववसइ पडिम आसण (भावसंग्रह)

इन सब प्रमाणोंसे यह सिद्ध है कि जितना दान पूजा स्वाध्याय अभिषेक आदिमें पुरुषको अधिकार है, उतना ही स्त्रीको भी है। स्त्रियोंको भगवान्के स्पर्श और अभिषेकसे रोकना हठग्राहिता, कुरूढि और पाप है।

भगवान्की पूजा तथा अभिषेकादि शुद्ध सज्जाति त्रिवर्ण व्यक्तिको बाह्यशुद्धि (स्नानादि) से विशेष शुद्ध हो यज्ञोपवीत, तिलकादि भूषित हो, पंचामृताभिषेकपूर्वक बैठकर एवं पूर्व अथवा उत्तरकी तरफ मुख करके करना चाहिये। अभिषेक व पूजा करते समय मौन रखना चाहिये। चंदन और पुष्पसे जो पूजा की जावे वह भगवान्के चरणोंपर करना चाहिये। इस प्रकार चंदन और पुष्पोंके संसर्गसे वीतरागतामें कोई बाधा नहीं आती। यह पूजाके लिए विशेष विधान आगमोक्त है। निर्वाणकांड गाथामें तो स्पष्ट आदेश है कि देवा कुणंति वुट्ठी केसर–कुसुमाण तस्स उवरिम्भि! अर्थात् भगवान्पर देवगण केसर और पुष्पोंकी वृष्टि करते हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्या स्त्रियां जिनाभिषेक व पात्रदान नहीं कर सकती ?

(लेखकः—श्री विद्यावाचस्पति पं. वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री)

जैन आगमोंमें गृहस्थोंके लिए नित्य षट्कर्म बतलाये गये हैं। देवपूजा, गुरूपास्ति, स्वाध्याय, संयम, तप, और दान ये गृहस्थोंके षट्कर्म हैं। इसी प्रकार मुनियोंके भी सामायिकादि षट्कर्म बतलाये गये हैं। भगवान कुंदकुंदने श्रावकोंके षट्कर्मोंमें दाणं पूजा मुख्खो सावय धम्मो, ऐसा बतलाते हुए श्रावक धर्ममें दानपूजाकी मुख्यता बतलाई, इसी प्रकार यतिधर्ममें ध्यान व अध्ययनको प्रधान बताया। सो श्रावकोंको दान व पूजा मुख्यतया अवश्य आचरणीय है।

गृहस्थ शब्दसे स्त्री और पुरुष दोनों लिए गये हैं। जैन आचार ग्रंथोंमें स्त्रियोंका आचार, पुरुषोंका आचार इस प्रकारका भेद कहीं भी प्रतिपादित नहीं है। परंतु भेद आजकलके पंडित अपनी मनो कल्पित सरणिके अनुसार करते हैं, यह उचित नहीं है। हां, स्त्रियोंके लिए अधिकसे अधिक कितने गुणस्थान हो सकते हैं। पुरुषोंके लिए कितने गुणस्थान हो सकते है, यह मर्यादा आगमोंमें बतलाई गई है। सो वहांतकके आचरणमें कोई भेद नहीं है। ऐसी स्थितिमें स्त्रियां दानपूजा भी पुरुषोंके समान नहीं कर सकती हैं, यह हास्यापद तर्क है।

पूजा शब्दसे अभिषेक, अष्टद्रव्यार्चन आदि लिए जाते हैं। इसलिए गृहस्थोंको जैसी पूजा करनेका अधिकार है, उसी प्रकार स्त्रियोंको भी पूजा करनेका अधिकार है। इस धार्मिक नित्यक्रियासे उन्हें वंचित

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नहीं करना चाहिए। बहुतसे सज्जन इसमें कुतर्क उठाते हैं कि वे प्रति समय अशुचि रहती हैं। अतः उन्हें देवपूजादिका अधिकार नहीं। सो यह कहना बराबर नहीं है। वे हर समय अशुचि नहीं रहती हैं। अशुचि रहनेकी कोई कालमर्यादा है। उस मर्यादातक वे ऐसे कार्योंसे दूर रहे, इसमें किसको आपत्ति हो सकती है? सदा अशुचि बता कर उन्हें धर्मकार्यसे वंचित करना ठीक नहीं है। स्त्रियोंको अर्जिकापदतक पहुंचनेकी मान्यता है। अर्जिकापद भी उपचारसे महाव्रत ही है। फिर वे क्या गृहस्थोचित दानपूजा सदृश कार्यको भी नहीं कर सकती हैं?

यदि स्त्रियां अपवित्र होनेके कारण पूजा नहीं कर सकती है तो साधुओंको आहारदान कैसे दे सकती हैं? आहारदान तो देती ही हैं। इसलिए अपवित्र होनेका कोई कारण सयुक्तिक नहीं। शायद इसीलिए अब यह बतला दिया जा रहा है कि वे आहारदान भी नहीं दे सकी हैं। एक गलतीको पोषण करनेके लिए दूसरी गलती की जा रही है।

स्त्रियोंने पूजा की है, आहारदान दिया है, इसके लिए ग्रंथोंमें प्रमाण है। उदाहरण हैं। यदि उन्हें अधिकार नहीं था तो ये प्रमाण कैसे उपस्थित होते?

(१) आदिपुराणमें स्वयंप्रभादेवीका वर्णन जहां आया है वहां छह महिनेतक वह जिनपूजामें उद्यत थी, यह लिखा गया है।

(२) आदिपुराण पर्व ४२ में सुलोचनाके संबंधमें देखिए।

तत्प्रतिष्ठाभिषेकांते महापूजा प्रकुर्वती।
मुहुः स्तुति भिरर्थ्याभिः स्तुवती भक्तितोर्हतः।
ददाति पात्रदानानि मानयंति महामुनीन्। इत्यादि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वह सुलोचना अनेक रत्नमय प्रतिमावोंको निर्माण कराकर एवं उनकी पूजाके लिए रत्नमय उपकरणोंको भी कराती थीं। तदनंतर उनकी प्रतिष्ठा कराकर महापूजा अभिषेक बार २ करती हुई भक्तिपूर्वक भगवंतकी स्तुति करती महामुनियोंको पात्रदान भी देती थी।

(३) पद्मपुराणमें सुलोचनाने अष्टान्हिकापर्वमें महाभिषेक पूजा कर राजदरबारमें स्थित अकंपन राजाको शेष पुष्पाक्षतको देनेका उल्लेख मिलता है।

(५) कुछ लोग कहते हैं कि देवेंद्रने अभिषेक किया। इंद्राणीने तो नहीं किया। फिर स्त्रियां अभिषेक क्यों करे। उनके समाधानके लिए इंद्राणीने जो अभिषेक किया वह भी प्रमाण उद्धृत किये जाते हैं।

गंधैः सुगंधिभिःसांद्रैरिंद्राणी गात्रमीशितुः।
अवलिंपं च लिंपाद्भिरिवामोदैस्त्रिविष्टपम् ॥

इंद्राणीने भगवानके शरीरको सुगंधित गंधके द्वारा लेपन किया, मानों वह तीन लोकको ही सुगधद्रव्यसे लेपन कर रही हो, अर्थात् उस सुगंधसे तीन लोक व्याप्त हुआ।

इंद्राणिप्रमुखा देव्याः सद्गंधैरवलेपनैः ।
चक्रुः उद्वर्तनं भक्त्या करैः कोमलपल्लवैः।
महीध्रमिव तं नाथं घटैर्जलधरैरिव।
अभिषिच्य समारब्धा इत्यादि।

पद्मपुराणमें पर्व ३ में देखियेगा।

अर्थात् इंद्राणि ही जिनमें प्रमुख हैं ऐसी देवांगनाओंने अपने कोमल हस्तपल्लवोंसे भगवंतके शरीरपर चंदनलेपन किया। और इसी प्रकार बहुत बडे २ कलशोंसे महाभिषेक किया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसी प्रकार हरिवंशपुराणमें श्रीनेमिनाथ तीर्थंकरके जन्मोत्सवके वर्णनमें भी निम्नलिखित प्रमाण है ।

ततः सुरपतिस्त्रियः जिनमुपेत्य शच्यादयः ।
सुगंधितनुपूर्वकैः मृदुकराः समुद्वर्तनम् ।
प्रचक्रुरभिषचनं शुभपयोभिरुच्चैर्घटैः ।
पयोधरभरैर्निजैरिव कुचैः समावर्तितैः ।

अर्थात् उसके बाद शची महादेवी आदि देवांगनाओंने भगवंतके शरीरको स्पर्श करते हुए सुगंधित जलसे अभिषेक किया । वे घट उनके कुचकुंभके अनुसार थे । सभी इंद्राणियोंने एक साथ ही अभिषेक किया ।

श्री भगवद् गुणभद्राचार्य कृत जिनदत्त चरित्रमें देखिये ।

गृहीतगंधपुष्पादिप्रार्चनाःसपरिच्छदा ।
अथैकदा जगामैषा प्रातरेव जिनालयम् ।
त्रिःपरीत्य ततः स्तुत्वा जिनांश्च चतुराशया,
संस्नाप्य पूजयित्वा च प्रयाता यतिसंसदि ।

अर्थात्:—एक दिन वह श्रेष्ठिपत्नी जीवंजसा स्नानादिके द्वारा शुद्ध होकर अपने परिवारके साथ प्रातः जिनालयमें गई, और जिनालयको तीन प्रदक्षिणा देकर स्तुतिपूर्वक अभिषेक करके मुनियोंकी सभामें गई ।

श्री नेमिचंद्रकृत श्रीपालचरित्रमें देखिये:—

अथैकदा सुता सा च सुधी मदनसुंदरी ।
कृत्वा पंचामृतैः स्नानं जिनानां सुखकोटिदं ।

अर्थात् अनंतर वह गुणवती मदनसुंदरीने कोटिसुखप्रद, जिनेंद्रका पंचामृतोंसे अभिषेक किया ।

आराधना कथाकोषमें प्रमाण देखिए ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तदा वृषभसेना च प्राप्य राज्ञीपदं महत्।
दिव्यान् भोगान् प्रभुंजाना पूर्वपुण्यप्रसादतः।
पूजयंती जगत्पूज्यान् जिनान्स्वर्गापवर्गदान्।
दिव्यैरष्टमहाद्रव्यैः स्नपनादिभिरुज्वलैः।

औषधदानमें प्रसिद्ध वृषभसेनाने पूर्वपुण्यप्रसादसे महारानीपदको प्राप्त किया। वहांपर वह स्वर्ग और मोक्षके लिए कारणभूत जिनपूजा व अभिषेक उत्तम द्रव्योंसे करती थी।

जिनसेनाचार्यकृत हरिवंशपुराण।

इत्युक्तो नोदयद्वेगात्सारथी रथमाप सः।
जिनवेश्म तमास्थाप्य तौ प्रविष्टौ प्रदक्षिणौ।
क्षीरेक्षुरसधारौघै कृतदध्युदकादीभि।
अभिषिच्य जिनेंद्रार्चामर्चितां नृसुरासुरैः॥

अर्थात् गंधर्वसेनाके वचनको सुनकर सारथी रथको जिन-मंदिरके पास ले गया, गंधर्वसेनाने जिनमंदिरको तीन प्रदक्षिणा देकर जिनेंद्र भगवंतका पंचामृतोंसे अभिषेक किया।

इसी प्रकार पद्मपुराण, महापुराण, गौतमचरित्र, षट्कर्मोपदेशरत्नमाला आराधना कथाकोष, व्रतकथाकोष, षट्पाहुड आदि अनेक ग्रंथोंमें इस विषयके लिए प्रमाण है। अतः इस विषयपर दुराग्रहको छोडकर स्त्रियोंको आगमानुमोदित जिनाभिषेक व पात्र-दानसे वंचित नहीं करना चाहिए।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महापुरुषोंका अभिमत

पंचामृताभिषेक, स्त्रियोंको जिनाभिषेकाधिकार आदि विषयोंके लिए आचार्योंके द्वारा प्रतिपादित ग्रंथोंमें उल्लेख हैं। हमें आचार्य वाक्य प्रमाण हैं।

स्व॰ चारित्रचक्रवर्ति आचार्य शांतिसागरजी महाराज

आर्षग्रंथोंमें प्रतिपादित कल्याणकारी क्रियाओंके प्रति प्रमादसे शिथिलाचारी बनना ठीक नहीं है। यथाविधि अभिषेक पूजादि करनेसे श्रावकोंको पुण्यबंध ही नहीं, कर्मनिर्जरा भी होती है।

तपोनिधि स्व॰ आचार्य वीरसागरजी महाराज

भगवान्के अभिषेक पूजनका वही अधिकारी हो सकता है जो मुनिदान देनेका अधिकारी हो। मुनिदान देनेका अधिकार स्त्रियोंको भी है, अतः अभिषेक पूजनका भी अधिकार उन्हे है।

न्यायालंकार, वा॰ के॰ न्यायदिवाकर, पं॰ मक्खनलालजी शास्त्री

जैनधर्ममें नर और नारी दोनोंको समान धार्मिक अधिकार प्राप्त है। अतः जैनाचार्योंने नारियोंके लिए भी पूजन प्रक्षालके अधिकार पुरुषोंके समान ही दिये हैं।

साहित्यसूरि, विदुषीरत्न ब्र॰ पं॰ चंदाबाईजी आरा

Printed by V. P. Shastri,
at Kalyan Power Printing Press,
Kalyan Bhawan, Sholapur.

For Private and Personal Use Only